

CHAPTER-III

हिमालय की बेटियां

2 MARK QUESTIONS

प्रश्न.1. नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं?

उत्तर:

नदियों को माँ मानने की परंपरा भारतीय संस्कृति में अत्यंत पुरानी है। नदियों को माँ का स्वरूप माना गया है, नदियाँ अपने जल से माँ के समान हमारा पालन - पोषण करती है, हमारे खेतों को सींचती है लेकिन लेखक नागार्जुन ने उन्हें बेटी, प्रेयसी व बहन के रूपों में भी देखते हैं।

प्रश्न.2. सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर:

सिंधु और ब्रह्मपुत्र हिमालय की दो ऐसी नदियाँ हैं जिन्हें ऐतिहासिकता एवं महत्व के आधार पर नद भी कहा गया है। इन्हीं दो नदियों में सारी नदियों का संगम होता है। इनका रूप विशाल और विराट है। ये दो ऐसी नदियाँ हैं जो दयालु हिमालय के पिघले दिल की एक - एक बूँद से बनी हैं।

प्रश्न.3. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है?

उत्तर:

नदियाँ युगों तक मानव जीवन के लिए कल्याणकारी रही हैं। ये एक माँ के समान हमारा भरण - पोषण करती हैं। इसलिए नदियाँ माँ के तरह पवित्र, पूजनीय व कल्याणकारी हैं। मनुष्य नदी को दूषित करने में कोई कमी नहीं छोड़ता परन्तु इतना दुःख, गन्दगी सहकर भी हमारा कल्याण उसी प्रकार करती है जैसे एक कठोर पुत्र का कल्याण माँ चाहती है। अतः काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

प्रश्न.4.हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है?

उत्तर:

हिमालय की यात्रा में लेखक ने हिमालय की अनुपम छटा की , नदियों की अठखेलियों की , बर्फ से ढँकी पहाड़ियों की , पेड़ - पौधों से भरी घाटियों की , चीर , देवदार , सरो , चिनार , कैल से भरे जंगलों की प्रशंसा की है।

प्रश्न.5

गोपालसिंह नेपाली की कविता 'हिमालय और हम', रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'हिमालय' तथा जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमालय के आँगन में' पढ़िए और तुलना कीजिए।

उत्तर:

रामधारी सिंह दिनकर की कविता "हिमालय " में उन्होंने भारत व हिमालय के गहरे सम्बन्ध का, विशाल व शक्तिशाली रूप एवं हिमालय का मूल उत्तर से दक्षिण तक फैले होने का विवरण किया है।

लेखक नागार्जुन ने इस पाठ में हिमालय को पिता यानी नदियों के पिता के रूप में प्रस्तुत किया है

प्रश्न.6 यह लेख 1947 में लिखा गया था। तब से हिमालय से निकलने वाली नदियों में क्या-क्या बदलाव आए हैं?

उत्तर:

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ अब अपनी पवित्रता और मूल रूप को प्रदूषण व मानव हानि के कारण खो चुकी हैं। मैदानी क्षेत्रों में आते - आते शहरों की गंदगी इस तरह मिल जाती है कि स्वच्छता के नाम और निशान मिट जाते हैं।

**प्रश्न.7 अपने संस्कृत शिक्षक से पूछिए कि कालिदास ने हिमालय को देवात्मा क्यों कहा है?
उत्तर:**

हिमालय पर्वत पर देवताओं का वास होने के कारण कालिदास ने हिमालय को देवात्मा कहा है। आज भी हिमालय भगवान शिव का वास स्थान के नाम से जाना जाता है।

5 MARK QUESTIONS

प्रश्न.1 नदियों और हिमालय पर अनेक कवियों ने कविताएं लिखी हैं। उन कविताओं का चयन कर उनकी तुलना पाठ में निहित नदियों के वर्णन से कीजिए।

उत्तर:

डॉ. परशुराम शुक्ल अपनी कविता “ नदी ” में सहनशील , संघर्षशील , समर्पण भावना से प्रेरित , कठिनाइयों का डटकर सामना करने वाली स्त्री के रूप में देखते हैं ।

लेखक नागार्जुन इस पाठ में नदी को माँ , बेटी , प्रेयसी व बहन के रूप में देखते हैं ।
सोहनलाल द्विवेदी जी ने अपनी कविता “ हिमालय ” में हिमालय का विवरण भारत के मुकुट व सम्मान के रूप में किया है । लेखक नागार्जुन ने इस पाठ में हिमालय को एक पिता के रूप में देखते हैं ।

प्रश्न.2 लेखक ने हिमालय से निकलनेवाली नदियों को ममता भरी आँखों से देखते हुए उन्हें हिमालय की बेटियाँ कहा है। आप उन्हें क्या कहना चाहेंगे? नदियों की सुरक्षा के लिए कौन-कौन से कार्य हो रहे हैं? जानकारी प्राप्त करें और अपना सुझाव दें।

उत्तर:

नदियाँ हमारा एक पुत्र के समान पालन - पोषण करती हैं । हम नदियों को माँ कहना चाहेंगे । नदियों के संरक्षण के लिए भारत सरकार अनेक योजनाएं चला रही हैं । परन्तु यह पूरी तरह से सफल नहीं हो रही हैं ।

नदियों को बचने के लिए हम सबको एकजुट होकर आगे कदम बढ़ाने होंगे । हमें नदियों के पानी में कचरा , शवों को न बहाए , उद्योगों से निकले रासायनिक पदार्थ न छोड़े । सरकार व हमें नदियों की स्वच्छता के लिए ठोस कदम उठाने होंगे ।

प्रश्न.3 नदियों से होनेवाले लाभों के विषय में चर्चा कीजिए और इस विषय पर बीस पंक्तियों को एक निबंध लिखिए।

उत्तर:

नदियां हमेशा से ही हमारे लिए महत्वपूर्ण रही है। नदियां मनुष्य, पशु, पक्षी सबके लिए लाभदायक है। नदियों का पानी खेतों की सिंचाई, जानवरों के लिए पानी आदि में उपयोग होता है। नदियों के पानी से हे बिजली बनाई जाती है जिसे हम "हाइड्रो इलेक्ट्रिसिटी" कहते हैं। पानी में रहने वाले जीवों का घर है नदी। नदियों को पवित्र मन जाता है इसलिए हम इनकी पूजा भी करते हैं। इनके होने से वातावरण की खूबसूरती बढ़ती है जिससे पर्यटकों का रुझान बढ़ता है।

नदियों को मनोरंजन व आनंद के रूप में उपयोग किया जाता है जैसे बोटिंग, राफ्टिंग आदि। इनसे शान्ति, सुख व पवित्रता की भावना आती है। नदियाँ मछुआरे, किसान, नाविक आदि अनेक लोगों की आजीविका का साधन है।

भाषा की बात

प्रश्न.4 अपनी बात कहते हुए लेखक ने अनेक समानताएँ प्रस्तुत की हैं। ऐसी तुलना से अर्थ अधिक स्पष्ट एवं सुंदर बन जाता है। उदाहरण

(क) संभ्रांत महिला की भाँति वे प्रतीत होती थीं।

(ख) माँ और दादी, मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकियाँ लगाया करता।

- अन्य पाठों से ऐसे पाँच तुलनात्मक प्रयोग निकालकर कक्षा में सुनाइए और उन सुंदर प्रयोगों को कॉपी में भी लिखिए।

उत्तर:

- सचमुच दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगी।
- हरी लकीर वाले सफ़ेद गोल कंचे।
- बच्चे ऐसे सुन्दर जैसे सोने के सजीव खिलौने।
- उन्होंने संदूक खोलकर एक चमकती-सी चीज़ निकाली।
- लाल किरण-सी चोंच खोल, चुगते तारक अनार के दाने।

प्रश्न.5 निर्जीव वस्तुओं को मानव-संबंधी नाम देने से निर्जीव वस्तुएँ भी मानो जीवित हो उठती हैं। लेखक ने इस पाठ में कई स्थानों पर ऐसे प्रयोग किए हैं, जैसे

(क) परंतु इस बार जब मैं हिमालय के कंधे पर चढ़ा तो वे कुछ और रूप में सामने थीं।

(ख) काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है।

- पाठ से इसी तरह के और उदाहरण ढूँढिए।

उत्तर:

- माँ-बाप की गोद में नंग-धड़ंग होकर खेलने वाली इन बालिकाओं को रूप
- बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियाँ बनकर ये कैसे खेला करती हैं।
- संभ्रांत महिला की भाँति प्रतीत होती थी।
- हिमालय को ससुर और समुद्र को उसका दामाद कहने में कुछ भी झिझक नहीं होती है।

इनका उछलना और कूदना, खिलखिला कर हँसते जाना, इनकी भाव-भंगी यह उल्लास कहाँ गायब हो जाता है।